

SHRI BHABANI CHARAN PATTANAIK

Shri Bhabani Charan Pattanaik is the Chairman, Kalinga Foundation Trust, the only organisation in India which gives an International Prize viz. Unesco-Kalinga Prize to eminent scientists across the globe and is engaged to popularize Science among common mass. He is also working as the President of Ruchika Social Service organisation a 31 years old reputed philanthropic organisation engaged in welfare and development of marginalized Children, as the General Secretary, Gopabandhu Daridra Narayan Seva Sangha which promotes Khadia and Cottage industries in Odisha. In addition, he works as President and Board of Director in many other development organizations and educational institutions in Odisha.

2. Born on May 11, 1922, Shri Pattanaik joined Gandhiji's Satyagrah Movement and left his school during Quit India Movement. Leading the peasant's movement at Nimapara in Puri district of Odisha, he unfurled the National Flag and tried to capture the Police Station on 16th Sept. 1942. As a result, one freedom fighter was shot dead on spot, 37 including him were injured and imprisoned. Released from jail after three and half years, he dedicated his life to fight against social discrimination, strongly supported Swadeshi movement, Harijan movement, and Peasant movement in Odisha. A protagonist of Khadi movement, he re-established Khadi in Odisha even at this modem age. He led the farmers who were getting agonized by the Math Mahantas, Zamindars and Mahazans (money lenders) for which the peasants were able to get their rights on the land they cultivated. Walked for miles and miles he reached the flood affected people with relief and advocated to government for permanent solution of flood. A real Satyagrahi, he conducted fasting several times for the rights of marginalized people to end violence.

3. A leader of suffering people and an effective organizer, he served as Secretary, Puri District Congress Committee (1951- 53), Provincial Organiser of Congress Seva Dal (1954-57), Chairman Congress Seva Dal, Odisha upto 1984, Provincial Secretary, Student and Youth Congress Committee, General Secretary and Chairman, Bharat Sevak Samaj (1957 - 65), General Secretary, Utkal Pradesh Congress Committee till 1961, Secretary of Utkal Pradesh Congress Party till 1967. He served as Member, Rajya Sabha for three terms from 1961 to 1984.

4. He inspires people for manual labour, simple living and brought spirituality to politics and social work. He has donated most of his property for the service of poor sufferings and for the development of education. He never drinks a glass of water before feeding the animals and birds around him. He lives his life as a saint.

5. He has received many awards and recognition including Presidential Medal — 1951 for Census work, Presidential Honour 2003 for his patriotic activities as Freedom Fighter, Rajiv Gandhi Samman — 2001, Rajdhani Gourav Samman-2015, Prananath Samman-2013 & 2016, Bhubaneswar Samman-2013, Sangrami Samman-2013, Samanta Gourav Samman- 2014, Gandhi-Binoba Santi Samman — 2006 and many other awards during his life time. Doordarshan and many other print/electronic media have featured his life history as a great patriot of Odisha.



श्री भबानी चरण पट्टनायक

श्री भबानी चरण पट्टनायक कलिंग फाउंडेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं, यह भारत में एकमात्र संगठन है जो पूरे विश्व में प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों को अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार अर्थात् यूनेस्को-कलिंग पुरस्कार प्रदान करता है और जो आम जनता के बीच विज्ञान को लोकप्रिय बनाने में जुटा है। आप 31 वर्ष पुराने प्रतिष्ठित लोकोपकारी संगठन, जो सीमांत बच्चों के कल्याण और विकास में जुटा है, रूचिका सामाजिक सेवा संगठन के अध्यक्ष के रूप में ओडिशा में खादी और कुटी उद्योग को बढ़ावा देने वाले गोपाबंधु दरिद्र नारायण सेवा संघ के महासचिव के रूप में कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, आप ओडिशा के बहुत से अन्य विकास संगठनों और शैक्षिक संस्थानों के अध्यक्ष और बोर्ड के निदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

2. आपका जन्म 11 मई, 1922 को हुआ और आपने गांधीजी के सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया तथा भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान आपने विद्यालय छोड़ दिया। ओडिशा के पुरी जिले के निमपारा में किसानों के आंदोलन का नेतृत्व करते हुए आपने राष्ट्रीय ध्वज फहराया तथा 16 सितम्बर, 1942 को थाने पर कब्जा करने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप एक स्वतंत्रता सेनानी को घटना स्थल पर ही मार गिराया गया और आप सहित 37 अन्य व्यक्ति घायल हुए और जेल भेज दिए गए। साढ़े तीन वर्ष बाद जेल से रिहा होने के बाद आपने सामाजिक भेदभाव से लड़ने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया और ओडिशा में स्वदेशी आंदोलन, हरिजन आंदोलन और किसान आंदोलन का जोरदार समर्थन किया। खादी आंदोलन के समर्थक होने के नाते आपने इस आधुनिक युग में भी ओडिशा में खादी को पुन:प्रतिष्ठित कर दिया। आपने मठ महंतों,जमींदारों और महाजनों (साहूकार) से परेशान कृषकों का नेतृत्व किया जिससे किसानों को उनके द्वारा जोती जाने वाली भूमियों पर अधिकार मिल पाया। बाढ़ से प्रभावित व्यक्तियों की मदद के लिए आप मीलों तक पैदल चल कर गए और बाढ़ के स्थाई समाधान हेतु सरकार के पास हिमायत की। सत्याग्रही के नाते आपने हिंसा समाप्त करने के लिए सीमांत लोगों के अधिकारों के लिए कई बार उपवास किए।

3. परेशान लोगों के नेता और प्रभावकारी संगठक के रूप में आपने सचिव, पुरी जिला कांग्रेस कमेटी (1951-53), कांग्रेस सेवा दल के प्रान्तीय संगठक (1954-57), कांग्रेस सेवा दल ओडिशा के 1984 तक अध्यक्ष, प्रान्तीय सचिव, विद्यार्थी और युवा कांग्रेस कमेटी, महासचिव और अध्यक्ष भारत सेवक समाज (1957-65), वर्ष 1961 तक महासचिव, उत्कल प्रदेश कांग्रेस कमेटी, वर्ष 1967 तक उत्कल प्रदेश कांग्रेस पार्टी के सचिव के पदों पर अपनी सेवाएं दीं। आप वर्ष 1961 से 1984 तक तीन अवधियों तक राज्य सभा के सदस्य रहे।

4. आप लोगों को शारीरिक श्रम, सादे जीवन के लिए प्रेरित करते हैं और आपने राजनीति और सामाजिक कार्यों को अध्यात्मिकता से जोड़ा है। आपने पीड़ित गरीबों की सेवा और शिक्षा के संवर्धन हेतु अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी। अपने आसपास के जानवरों और पक्षियों को खिलाए बिना आप जल ग्रहण नहीं करते हैं और आप संत का जीवन जीते हैं।

5. आपको बहुत से पुरस्कार और सम्मान मिलें हैं जैसे जनगणना कार्य के लिए राष्ट्रपति मेडल-1951, स्वतंत्रता सेनानी के रूप में देशभक्ति की गतिविधियों हेतु राष्ट्रपति सम्मान 2003, राजीव गांधी सम्मान-2001, राजधानी गौरव सम्मान- 2015, प्राणनाथ सम्मान - 2013 और 2016, भुवनेश्वर सम्मान-2003, संग्रामी सम्मान-2013, सामन्त गौरव सम्मान-2014, गांधी विनोबा शान्ती सम्मान-2006 और आपके जीवन काल के दौरान प्राप्त बहुत से अन्य पुरस्कार। दूरदर्शन और बहुत से अन्य प्रिन्ट/इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने ओडिशा के महान देशभक्त के रूप में आपके जीवन इतिहास को दिखाया है।